सीखने के परिणाम–आधारित पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क (एलओसीएफ)

Learning Outcome-based Curriculum Frame Work

एम.ए. हिन्दी

(सेमेस्टर प्रणाली)

सेमेस्टर प्रथम एवं द्वितीय – सत्र 2025–2026

सेमेस्टर तृतीय एवं चतुर्थ – सत्र 2026–2027

हिन्दी विभाग

महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

पृष्ठभूमि

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उच्च शिक्षा संस्थानों के पाठ्यक्रमों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आलोक में तैयार करने के स्पष्ट दिशा–निर्देश दिए हैं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का मानना है कि भविष्य की आवश्यकताओं और संभावनाओं को मध्यनजर रखते हुए प्रत्येक विश्वविद्यालय अपनी पाठ्यचर्या कुछ इस तरह से निर्मित करें कि राष्ट्र को जानकार, प्रबुद्ध, कौशल सम्पन्न और विवेकवान नागरिक मिलें।

यह पाठ्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) की सुझाई राह पर चलने व गतिशील होने की भावना से परिपूरित है। आज राष्ट्र को ऐसे नागरिकों की आवश्यकता है कि जो अन्तर–अनुशासनिक अध्ययनों से सम्पन्न हो, मूल्यदृष्टि से परिपूर्ण, आलोचनात्मक विवेक से संचालित, जीवन कौशल में प्रवीण, उद्यमशील, नवाचार के लिए उत्सुक, संवैधानिक मूल्यों के लिए समर्पित खोज, संवाद और विश्लेषण की भावना से भरे, परिपक्व स्वदेशी एवं भारतीय ज्ञान प्रणाली के महत्त्व को समझने वाले, राष्ट्रीयता और आधुनिकता का संगम हो। हमारी शिक्षा छात्रकेन्द्रित, सहभागिता प्रधान, सक्रियता और संवेदनशीलता के साथ सीखने के आनंद से गहरी जुड़ी हो।

पाठ्यक्रम के विभिन्न पहलू देशज ज्ञान, शिल्प, उद्योग और सांस्कृतिक परम्पराओं के साथ छात्र के भारतबोध को परिपुष्ट करने वाले हों।

कार्यक्रम के परिणाम (पीओ)

कला संकाय में परास्नातक पाठ्यक्रम पूरा करने पर, छात्रों को इसका एहसास हो सकेगा।

निम्नलिखित परिणाम :

	विवरण
PO-1	छात्र अपने देश, समाज के साथ–साथ स्वयं को भी समझें और जागरूक रहें। नैतिक समस्याएँ, सामाजिक अधिकार, मूल्य और स्वयं तथा दूसरों के प्रति उत्तरदायित्व की भावना से परिपूरित हों।
PO-2	विविध विषयों की आलोचनात्मक समझ प्रदर्शित करें। उनके भिन्न–भिन्न रूपों में अन्तर्निहित ज्ञान एवं संवेदना को समझें।
PO-3	रचनात्मक और आलोचनात्मक अंतर्दृष्टि, सौंदर्य संवेदनशीलता, विश्लेषणात्मक कौशल और अंतर्दृष्टि. को विकसित करें।
PO-4	भाषाओं एवं साहित्य में नवाचारों और विकास की प्रक्रिया को समझें। जीवन भर सीखने में संलग्न रहने की प्रवृत्ति का बोध विकसित कर सकें।
PO-5	मानविकी और सामाजिक विज्ञान में उपलब्ध सिद्धांतों, अवधारणाओं और अनुसंधान विधियों का ज्ञान विकसित करें।
PO-6	साहित्य के विविध रूपों यथा – मौखिक, लिखित को प्रभावी ढंग से न केवल समझें वरन् तकनीक एवं अन्य माध्यमों से उनके साथ संवाद भी करें।
PO-7	सूचना के प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों तक कैसे पहुँचें एवं अन्तर–अनुशासनिक विश्लेषण के माध्यम से ज्ञान के केन्द्र तक की यात्रा रचनात्मक अनुष्ठान से सम्पन्न करें।
PO-8	अनुसंधान की विविध विधियों का बोध हो।
PO-9	ऐसी मूल्य दृष्टि का विकास करें जिससे विविधता के प्रति आकर्षण और समाज के उत्थान में हमारे योगदान का स्वमूल्यांकन किया जा सके।

PO-10	सम्प्रेषण कौशल एवं ज्ञानात्मक एवं वैज्ञानिक सोच के दायरे को बढ़ाया जा सके और उसे समुन्नत भी किया जा सके।
PO-11	अनुसंधान की परम्परागत प्रणालियों में तकनीक के प्रवेश और प्रभाव से विश्लेषण की नवीन पद्धतियों का आत्मसातीकरण हो।
PO-12	शिक्षण कौशल के विकास के साथ–साथ पठन–पाठन हेतु नवीन विधियों की खोज का मार्ग प्रशस्त हो।
PO-13	सक्षम नागरिक विवेक और भारतीय आदर्शों को बढ़ावा देने वाले हो।
PO-14	भाषा के समुचित आयामों का स्पर्श करते हुए वैज्ञानिक दृष्टि से उसमें व्याप्त संभावनाओं की तलाश का क्रम जारी रख सकें।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

- व्याख्यान
- चर्चाएँ
- सहभागी शिक्षण
- पारस्परिक सत्र
- समीनार
- अनुसंधान–आधारित शिक्षण : निबंध या परियोजना कार्य
- प्रौद्योगिकी–आधारित शिक्षण

Learning Outcome Index

I. Programme Outcomes (PO) and Programme Specific Outcomes (PSO)

PO	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5	PSO-6	PSO-7	PSO-8	PSO-9	PSO-10
PO-1	X		X	X	X	X		X	X	X
PO-2		X	X		X	X	X	X		X
PO-3	X		X	X		X	X	X	X	
PO-4	X	X	X	X	X	X	X		X	X
PO-5	X	X	X	X	X		X	X	X	
PO-6	X	X	X		X	X	X		X	X
PO-7	X	X	X		X	X	X	X	X	
PO-8		X	X	X	X	X	X	X	X	X

Core Courses (CC) :

PSO	CC-1	CC-2	CC-3	CC-4	CC-5	CC-6	CC-7	CC-8	CC-9	CC-10	CC-11	CC-12	CC-13	CC-14	CC-15	CC-16	CC-17
PSO-1	X		X	X	X	X		X	X	X	X	X	X	X	X	X	X
PSO-2		X	X		X	X	X	X		X	X	X	X	X		X	X
PSO-3	X		X	X		X	X	X	X		X	X	X	X	X	X	X
PSO-4	X	X	X	X	X	X	X		X	X	X	X		X		X	X
PSO-5	X	X	X	X	X		X	X	X		X	X	X		X	X	X
PSO-6	X	X	X		X	X	X		X	X	X	X	X	X	X	X	X
PSO-7	X	X	X		X	X	X	X	X		X	X	X		X	X	X
PSO-8		X	X	X	X	X	X	X	X	X	X	X		X	X	X	X

1. ElectiveCourses(EC):

PSO	EC-1	EC-2	EC-3	EC-4	EC-5	EC-6	EC-7	EC-8	EC-9	EC-10	EC-11	EC-12	EC-13
PSO-1	X	X	X		X	X	X		X	X	X	X	X
PSO-2	X		X	X		X	X	X	X	X		X	X
PSO-3		X	X	X	X	X		X	X	X	X		X
PSO-4	X	X	X	X	X		X	X		X	X	X	X
PSO-5	X	X		X	X	X		X	X	X		X	X
PSO-6	X		X	X		X	X		X		X	X	X
PSO-7	X	X	X		X	X		X	X	X	X	X	X
PSO-8		X	X	X	X		X	X		X	X	X	X

परास्नातक के गुण

- अन्तर अनुशासनात्मक ज्ञान
- रचनात्मक और आलोचनात्मक विचार
- चिंतन
- समस्या निदान
- विश्लेषणात्मक तर्क
- संप्रेषण कौशल
- अनुसंधान कौशल
- जीवन कौशल
- बहुसांस्कृतिक क्षमता
- नैतिक मूल्य
- आजीवन सीखना
- वैश्विक योग्यता
- परम्परागत ज्ञान प्रणाली के प्रति सजगता/देशज ज्ञान व्यवस्था

पाठ्यक्रम संरचना

सेमेस्टर – प्रथम

SR. No	**Course Title**	**Course Code**	Level	L	T	P	**Credits**	**Marks (Est+Int)**	**Min. Passing Marks %**	**Hours in a Week**
	Ability Enhancement Course									
(i)	भारतीय साहित्य (सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक अध्ययन)	AEC-T101	6.5	2	0	0	**2**		**Non-CGPA S/NS**	**2**
	Discipline Centric Compulsory Courses									
(1)	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल तक)	Hin-DCC-T-102	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
(2)	आदिकालीन हिन्दी काव्य	HIN-DCC-T-103	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
(3)	भक्तिकालीन हिन्दी काव्य	HIN-DCC-T-104	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
(4)	रीतिकालीन हिन्दी काव्य	HIN-DCC-T-105	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
	TOTAL CREDITS						26			
	TOTAL MAXIMUM MARKS							600		

सेमेस्टर – द्वितीय

SR. No	**Course Title**	**Course Code**	Level	L	T	P	**Credits**	**Marks (Est+Int)**	**Min. Passing Marks %**	**Hours in a Week**
	Value Added Course									
(i)	राष्ट्रीय एवं मानव मूल्य	VAC-T201	6.5	2	0	0	**2**		**Non-CGPA S/NS**	**2**
	Discipline Centric Compulsory Courses									
(5)	भारतीय काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन	HIN-DCC-T-202	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
(6)	हिन्दी साहित्य का इतिहास : आधुनिक काल	HIN-DCC-T-203	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
(7)	आधुनिक हिन्दी काव्य–प्रथम	HIN-DCC-T-204	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
(8)	हिन्दी कथा साहित्य एवं नाटक	HIN-DCC-T-205	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
	TOTAL CREDITS						26			
	TOTAL MAXIMUM MARKS							600		

सेमेस्टर – तृतीय

SR. No	**Course Title**	**Course Code**	Level	L	T	P	**Credits**	**Marks (Est+Int)**	**Min. Passing Marks %**	**Hours in a Week**
	Skilled Development Course									
(iii)	**Basic Comminication Skills or Basic Computer Course or Seminar + Academic Writing**	SDC-T301	6.5	2	0	0	**2**		**Non-CGPA S/NS**	**2**
	Discipline Centric Compulsory Courses									
(9)	आधुनिक हिन्दी काव्य–द्वितीय	HIN-DCC-T-302	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
(10)	पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त एवं वाद	HIN-DCC-T-303	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE COURSES										
(11)	अस्मिता विमर्श और हिन्दी साहित्य **अथवा** हिन्दी उपन्यास	HIN-DSE-T-304 (A) **OR** HIN-DSE-T-304 (B)	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
(12)	हिन्दी नाटक एवं रंगमंच अथवा हिन्दी आलोचना अथवा राजस्थान का हिन्दी साहित्य	HIN-DSE-T-305 (A) OR HIN-DSE-T-305 (B) HIN-DSE-T-305 (C)	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
	TOTAL CREDITS						26			
	TOTAL MAXIMUM MARKS							600		

सेमेस्टर – चतुर्थ

SR. No	Course Title	Course Code	Level	L	T	P	Credits	Marks (Est+Int)	Min. Passing Marks %	Hours in a Week
	Ability Enhancement Course									
(iv)	**General Health and Hygiene**	AEC-T401	6.5	2	0	0	**2**		**Non-CGPA S/NS**	**2**
	Discipline Specific Elective Courses									
(13)	भाषा विज्ञान	HIN-DSET-402	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
(14)	हिन्दी का कथेतर साहित्य	HIN-DSET-403	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
DISSERTATION/PROJECT/INTERNSHIP/RESEARCH CREDIT COURSES (ONE)										
(15)	**लघु शोध प्रबन्ध / परियोजना / क्षेत्र अध्ययन (DPR) OR Internship/ On-Job Training (OJT) OR Reserch Credit Course**	HIND-DPR-404 (A) OR HIND-OJT-404 (B) OR HIND-RCC-404 (C)	6.5	5	1		12	300 (240+60)	36	
अथवा OR Discipline Centric Compulsory Courses										
(16)	**हिन्दी भाषा एवं साहित्य विविध आयाम निम्न में से कोई दो** i. प्रयोजन मूलक हिन्दी ii. पाठालोचन iii. अनुवाद : सिद्धान्त एवं प्रविधि iv. लोक साहित्य	HIND-DCC-T 404 (A) HIND-DCC-T 404 (B) HIND-DCC-T 404 (C) HIND-DCC-T 404 (D)	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
(17)	विशिष्ट साहित्यकार **निम्न में से कोई दो** i. गोस्वामी तुलसीदास ii. मीरां iii. प्रेमचन्द iv. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला	HIND-DCC-T 405 (A) HIND-DCC-T 405 (B) HIND-DCC-T 405 (C) HIND-DCC-T 405 (D)	6.5	5	1		6	150 (120+30)	36	6
	TOTAL CREDITS						26			
	TOTAL MAXIMUM MARKS							600		

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –प्रथम

भारतीय साहित्य (सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक अध्ययन)

कोर्स कोड – AEC-T-101

उद्देश्य –

इस पाठ्यक्रम से छात्र का भारतीय साहित्य सम्बन्धी अवधारणात्मक बोध विकसित होगा। छात्र भारतीय साहित्य के अध्ययन की आवश्यकता के साथ उसके स्वरूप से अपना सम्बन्ध स्थापित कर सकेगा।

विभिन्न भारतीय भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य से छात्र का परिचय बढ़ेगा।

भारतीय साहित्य की विशेषताओं एवं अध्ययन में आने वाली कठिनाइयों का परिचय प्राप्त करते हुए भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषिक स्थिति और भारत की विविधवर्णी साहित्यिक परम्पराओं से परिचित हो सकेगा।

परिणाम –

इस पाठ्यक्रम के अध्ययनोपरान्त छात्र में भारतीय साहित्यिक परम्पराओं के परस्पर आदान–प्रदान, एकता के सूत्र और वैषिष्ट्य के बोध का विकास होगा।

प्रतिनिधि भारतीय रचनाकारों की विशिष्ट कृतियों के साथ रागात्मक सम्बन्ध बढ़ेगा।

भारतीय साहित्य (सैद्धान्तिक अध्ययन व व्यावहारिक अध्ययन)

इकाई – 1

भारतीय साहित्य : अवधारणा, स्वरूप, विकास, अध्ययन की आवश्यकता, भारतीय साहित्य का वैशिष्ट्य, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भाषिक स्थिति एवं प्रतिबिम्बत मूल्यों का विश्लेषण।

इकाई–2

प्रमुख भारतीय साहित्यिक परम्पराएँ : परिचय, आदान–प्रदान, परस्पर एकता के सूत्र, स्वत्त्व और सांस्कृतिक एकता, भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ

इकाई – 3

गोरा (उपन्यास) : रवीन्द्रनाथ टैगोर, (अनु.) सच्चिदानंद वात्स्यायन

इकाई–4

आधुनिक भारतीय कविता : (सं.) अवधेशनारायण मिश्र

इकाई–5

खामोश अदालत जारी है। (नाटक) : विजय तेन्दुलकर, (अनु.) सरोजनी वर्मा scribd.com

संदर्भ ग्रंथः

1. भारतीय साहित्य : डॉ. नगेन्द्र
2. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास : डॉ. नगेन्द्र
3. भारतीय भाषाओं के साहित्य का संक्षिप्त इतिहास : सं. गोपाल शर्मा और जगदीश चतुर्वेदी
4. आज का भारतीय साहित्य : सर्वपल्ली राधाकृष्णन
   अनुवाद : प्रभाकर माचवे
5. भारतीय साहित्य : मूलचन्द गौतम
6. तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य : इन्द्रनाथ चौधरी
7. भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ : के. सच्चिदानंदन
8. प्राचीन भारतीय साहित्य का इतिहास : एम.विन्टरनित्ज
9. भारतीय साहित्य की भूमिका : रामविलास शर्मा

परीक्षा एवं मूल्यांकन योजना–

यह एक Non CGPA Course है। अतः विश्वविद्यालय द्वारा सैद्धान्तिक परीक्षा आयोजित नहीं की जाएगी। केवल महाविद्यालय स्तर पर छात्र का सतत आन्तरिक मूल्यांकन होगा और सत्रांत में एक आन्तरिक वाक्परीक्षा (Viva) करके मात्र ''संतोषजनक'' या ''असंतोषजनक'' प्रत्यय (क्रेडेंशियल्स) ही विश्वविद्यालय को प्रेषित किया जाऐगा।

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –प्रथम

हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल तक)

कोर्स कोड – HIND DCC-T-102

हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल तक)

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

उद्देश्य–

इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत छात्र को हिन्दी साहित्य के इतिहास का विस्तृत ज्ञान एवं पहलुओं के सम्यक् विश्लेषण का अवसर मिलेगा।

निर्धारित कालखण्ड के विषिष्ट रचनाकारों के रचनात्मक संसार से उनका परिचय बढ़ेगा।

परिणाम–

छात्र साहित्य–इतिहास की बहुरंगी परम्पराओं, मतों, अवधारणाओं को भली–भाँति जान–समझ सकेगा।

परम्पराओं के परस्पर समन्वय की दृष्टि से छात्र में परम्परा की निरन्तरता को जानने, समझने के साथ उसे विश्लेषित करने की बौद्धिक क्षमता का विकास होगा।

इकाई–1

साहित्य की इतिहास दृष्टि, हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ (पूर्वापर सीमा निर्धारण) हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा, हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की समस्याएँ, काल विभाजन।

इकाई–2

आदिकाल– पृष्ठभूमि, सीमांकन, नामकरण, साहित्य (सिद्ध, नाथ, जैन, रासो, लौकिक एवं गद्य रचनाएँ।

आदिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियाँ एवं सामान्य विशेषताएँ। आदिकालीन साहित्य अध्ययन की समस्याएँ, उपलब्धियाँ।

इकाई–3

. **भक्तिकाल :–** भक्ति आन्दोलन, उदय, पृष्ठभूमि, भक्ति का स्वरूप, विभाजन, भक्ति आन्दोलन का अखिल भारतीय स्वरूप।

सगुण भक्ति धारा :– वैचारिक आधारभूमि, वैशिष्ट्य, राम व कृष्ण भक्ति काव्य परम्परा : उत्पत्ति, कवि एवं काव्य, पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएँ, विविध सम्प्रदाय, अष्टछाप, गीति परम्परा, लोक जागरण।

इकाई–4

निर्गुण काव्य परम्परा :– वैचारिक आधारभूमि, वैशिष्टय संत काव्य व प्रेमाख्यान काव्य – आधारभूमि, प्रमुख कवि व काव्य, प्रवृत्तियाँ, भारतीय संस्कृति, लोकतत्व।

इकाई–5

रीतिकाल :– पृष्ठभूमि, नामकरण, सीमानिर्धारण, रीति काव्य के मूल स्रोत, रीति की अवधारणा, रीतिकाव्य की प्रमुख धाराएँ– रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त– प्रमुख कवि व काव्य, रीतिकाल की अन्य प्रवृत्तियाँ – भक्तिकाव्य, वीर काव्य, नीति काव्य।

सहायक ग्रंथ –

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य उद्‌भव और विकास : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
3. आदिकाल की भूमिका : आचार्य हाजारीप्रसाद द्विवेदी
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र
5. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी
6. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास : डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त
7. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : डॉ. रामकुमार वर्मा
8. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ : डॉ. शिवकुमार शर्मा
9. हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन : नलिन विलोचन शर्मा
10. साहित्येतिहास : सरंचना और स्वरूप : सुमन राजे
11. हिन्दी साहित्य का अतीत : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
12. भक्ति का विकास : मुंशीराम शर्मा
13. हिन्दी काव्य में निर्गुण संप्रदाय : पीताम्बरदत्त बड़थ्थवाल
14. भक्तिकाल की सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना : प्रेमशंकर
15. वैष्णव भक्ति आंदोलन का अध्ययन : मलिक मोहम्मद
16. सिद्ध साहित्य : धर्मवीर भारती
17. नाथ सम्प्रदाय : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
18. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चनसिंह

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –प्रथम

आदिकालीन हिन्दी काव्य

कोर्स कोड – HIN – DCCT- 103

आदिकालीन हिन्दी काव्य

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

उद्देश्य

इस अध्ययन सामग्री से गुजरने पर छात्र को हिन्दी साहित्य के आदिकाल के प्रमुख कवि और कविता का परिचय बढ़ेगा एवं साहित्य इतिहास के प्रारंभ में रची जा रही रचनात्मकता से रचना प्रक्रिया को जानने समझने का अवसर मिलेगा।

परिणाम

इस पाठ्य सामग्री के अध्ययन पष्चात् छात्र आदिकाल से लेकर रीतिकाल के बीच हुए काव्यात्मक विकास की संवेदना को तो समझेगा ही साथ ही इस काल खण्ड के विविध धाराओं के प्रतिनिधि कवियों के काव्य से उसका परिचय बढ़ेगा।

इकाई–1

गोरखबानी : (सं) पीतांबरदत्त बड़थ्थवाल

पद – 1 से 20 तक

इकाई –2

पृथ्वीराज रासो : (सं) माताप्रसाद गुप्त

पद्मावती समय

इकाई – 3

विद्यापति की पदावली : (सं) रामवृक्ष बेनीपुरी

पद संख्या : 1,2,5,10,18,23,27,29,36,42 (कुल 10 पद)

इकाई – 4

वीसलदेव रास (सम्पूर्ण) : सं. माताप्रसाद गुप्त

इकाई – 5

ढोलामारू रा दूहा : सं. नरोत्तमास स्वामी, ठा.रामसिंह, सूर्यकरण पारीक

दोहा संख्या 1 से 30 (कुल 30 दोहे)

सहायक ग्रंथ–

1. रासो विमर्श : डॉ. माताप्रसाद गुप्त
2. पृथ्वीराज रासो की भाषा : डॉ. नामवर सिंह
3. आदिकालीन हिन्दी साहित्य : अध्ययन की दिशाएँ : अनिल राय
4. प्राकृत–अपभ्रंश और उसका हिन्दी पर प्रभाव : रामसिंह तोमर
5. अपभ्रंश साहित्य : हरिवंश कोछड़
6. नाथ सम्प्रदाय : हजारीप्रसाद द्विवेदी
7. अपभ्रंश भाषा और साहित्य : राजमणि शर्मा
8. गोरखनाथ और उनका युग : रांगेय राघव
9. विद्यापति : शिवप्रसाद सिंह
10. हिन्दी के प्राचीन कवि : डॉ. विमल

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –प्रथम

भक्तिकालीन हिन्दी काव्य

कोर्स कोड – HIN-DCCT-104

समय 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

भक्तिकालीन हिन्दी काव्य

उद्देश्य–

इस पाठ्य सामग्री के अध्ययन पश्चात् छात्र भारतीय साहित्य में भक्ति के विकास क्रम, भक्ति आन्दोलन और उसके स्वरूप का परिचय प्राप्त करते हुए उसके विविध प्रकारों को भली–भाँति जान–समझ सकेगा।

परिणाम–

भक्तिकाव्य के विविधवर्णी संसार का पूर्ण परिचय प्राप्त करने के क्रम में प्रतिनिधि रचनाकारों के रचनात्मक वैशिष्ट्य का आस्वादन कर सकेगा।

इकाई –1

कबीर

कबीर ग्रंथावली (सं.) श्यामसुंदर दास

गुरुदेव कौ अंग	: साखी 1, 2, 6, 9, 11, 22, 24, 28, 30, 31 = 10
सुमिरन कौ अंग	: साखी 1, 5, 7, 9, 27, 32 –6
बिरह कौ अंग	: साखी 8, 18, 20, 23, 30, 32, 35, 44 = 8
ग्यान बिरह कौ अंग	: साखी 3, 4, 6, 7, 8, 10 = 6
परचा कौ अंग	: साखी 1, 3, 4, 8, 9, 17, 22, 23, 39, 45 = 10

लै कौ अंग : साखी 1, 2, 3 = 3

निहकर्मी पतिब्रता कौ अंग : साखी 1, 2, 4, 5, 7, 16, 17 = 7

— कुल 50 साखी

पद संख्या : 1, 10, 11, 16, 23, 32, 39, 40, 43, 64 = कुल 10 पद

इकाई –2 जायसी

जायसी ग्रंथावली : (सं.) रामचन्द्र शुक्ल

नाममती वियोग खण्ड

इकाई –3

सूरदास

भ्रमरगीत सार : (सं) रामचन्द्र शुक्ल

पद सं. 1 से 50 (कुल 50 पद)

इकाई – 4

तुलसीदास

विनय पत्रिका (सं.) वियोगी हरि

पद संख्या 136 से 200 तक (कुल 65 पद)

इकाई – 5

मीरां

मीरां पदावली : (सं.) शंभुसिंह मनोहर

पद संख्या 1 से 50 (कुल 50 पद)

संदर्भग्रंथ –

1. कबीर साहित्य की परख : परशुराम चतुर्वेदी
2. कबीर : हजारीप्रसाद द्विवेदी
3. कबीर : सं. डॉ. विजयेन्द्र स्नातक
4. कबीर मीमांसा : रामचन्द्र तिवारी
5. कबीर : एक नयी दृष्टि : रघुवंश
6. कबीरदास : विविध आयाम : सं. प्रभाकर श्रोत्रिय
7. जायसी के काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन : भीमसिंह मलिक
8. जायसी ग्रंथावली की भूमिका : रामचन्द्र शुक्ल
9. जायसी – एक नयी दृष्टि : रघुवंश
10. जायसी : विजयदेवनारायण साही
11. सूर की काव्यकला : डॉ. मनमोहन गौतम
12. सूर और उनका साहित्य : हरवंशलाल शर्मा
13. भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य : मैनेजर पाण्डेय
14. लोकवादी तुलसीदास : विश्वनाथ त्रिपाठी
15. तुलसीदास : सं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
16. तुलसी काव्य मीमांसा : उदयभानु सिंह
17. भक्ति काव्य और भक्ति आन्दोलन : शिवकुमार मिश्र
18. मीरांबाई : कल्याणसिंह शेखावत
19. मीरां : जीवन और काव्य : सी.एल.प्रभात
20. हिन्दी के प्राचीन कवि : डॉ. विमल
21. हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि : डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सैना

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –प्रथम

रीतिकालीन हिन्दी काव्य

कोर्स कोड – HIN-DCCT-105

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

रीतिकालीन हिन्दी काव्य

उद्देश्य–

इस पाठ्य सामग्री से रीतिकाल के काव्यात्मक विकास और उसके विविधताओं के विभिन्न पहलुओं से छात्र का परिचय बढ़ेगा।

छात्र रीतिकाल की तीनों धाराओं के स्वरूप, प्रभाव और अवदान से परिचित हो सकेगा।

परिणाम–

छात्र रीतिकालीन कविता के आस्वादन की प्रक्रिया से तो गुजरेगा ही, साथ ही वह रीतिकालीन काव्य की विविधता में व्याप्त रीति की अन्तर्सूत्रात्मकता को भली–भाँति जान–समझ सकेगा।

इकाई –1 बिहारी

बिहारी रत्नाकार (सं.) जगन्नाथदास रत्नाकर

(निर्धारित अंश : दोहा संख्या 31 से 60 तक)

इकाई –2 घनानंद

घनानंद (सं.) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

घनानंद – कवित्त : (निर्धारित अंश–प्रथम 50 पद)

इकाई – 3 मतिराम

ललित ललाम (निर्धारित अंश – छन्द संख्या 1 से 30 तक)

मतिराम ग्रंथावली : संपादक कृष्णबिहारी मिश्र एवं ब्रजकिशोर मिश्र

इकाई – 4 पद्माकर

पद्माकर– पंचामृत (सं.) पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

(निर्धारित अंश – प्रबोध पचासा)

इकाई – 5 गुरु गोविन्दसिंह

चण्डी–चरित्र : उक्तिविलास, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली

छंद संख्या : 1 से 116 तक (प्रथम तीन अध्याय)

सहायक ग्रंथ –

1. मतिराम : कवि और आचार्य : महेन्द्रकुमार
2. बिहारी सप्तशती : ओमप्रकाश
3. बिहारी की वाग्विभूति : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
4. बिहारी का नया मूल्यांकन : बच्चनसिंह
5. घनानंद : काव्य वैभव : मनोहरलाल गौड़

6. घनानंद काव्य और आलोचना : किशोरीलाल
7. घनानंद : लल्लन राय
8. पद्माकर की काव्य साधना : ब्रजरत्नदास
9. पद्माकर कवि : शुकदेव दुबे
10. गुरु गोविन्द सिंह और उनकी हिन्दी कविता : महीप सिंह
11. गुरु गोविन्द सिंह के साहित्य में भारतीय संस्कृति : धर्मपाल मैनी

परीक्षा एवं मूल्यांकन योजना–

- **परीक्षा प्रश्न पत्र 03 घण्टे की अवधि का होगा।**
- **कुल मूल्यांकन 150 अंकभार का रहेगा, जिसमें 120 अंक की लिखित परीक्षा होगी तथा 30 अंक का आन्तरिक मूल्यांकन होगा।**
- **120 अंकों के उपर्युक्त परीक्षा सेमेस्टर के अंत में होगी।**
- **विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस सेमेस्टर परीक्षा का प्रत्येक प्रश्न पत्र 3 खण्डों (अ–ब–स) में निम्नानुसार विभक्त होगा।**

– **खण्ड 'अ' (20 अंक) में कुल 10 प्रश्न होगें, प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त–स्थान–पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।**

– **खण्ड 'ब' (40 अंक) मे 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से 1 प्रश्न/व्याख्या (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अंकों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 200 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।**

– **खण्ड 'स' (60 अंक) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 500 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।**

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –द्वितीय

राष्ट्रीय एवं मानव मूल्य

कोर्स कोड – VAC-T201

राष्ट्रीय एवं मानव मूल्य

परीक्षा एवं मूल्यांकन योजना–

यह एक Non CGPA Course है। अतः विश्वविद्यालय द्वारा सैद्धान्तिक परीक्षा आयोजित नहीं की जाएगी। केवल महाविद्यालय स्तर पर छात्र का सतत आन्तरिक मूल्यांकन होगा और सत्रांत में एक आन्तरिक वाक्परीक्षा (Viva) करके मात्र ''संतोषजनक'' या ''असंतोषजनक'' प्रत्यय (क्रेडेंशियल्स) ही विश्वविद्यालय को प्रेषित किया जाएगा।

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –द्वितीय

भारतीय काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

कोर्स कोड – HIN-DCCT-202

समय 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

भारतीय काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

उदेश्य–

छात्र काव्यशास्त्र के इतिहास, आचार्य परम्परा, उसके महत्त्व एवं प्रमुख सिद्धान्तों का परिचय प्राप्त कर अपनी काव्यशास्त्रीय मान्यताओं के आलोक में हिन्दी कविता के विकास को भली–भाँति जान सकेगा।

परिणाम–

काव्यशास्त्र की प्राचीन परम्पराओं का समेकित अध्ययन करते हुए प्रमुख आचार्यों के मतों के वैशिष्ट्य का विश्लेषण कर सकेगा तथा इसके माध्यम से साहित्य के शास्त्रीय पक्ष की समझ बढ़ेगी।

इकाई–1

काव्य की अवधारणा, काव्य का स्वरूप, काव्य के तत्त्व, काव्य लक्षण, काव्य प्रयोजन, काव्य हेतु, काव्य सृजन की प्रक्रिया और काव्यात्मा विमर्श।

काव्यशास्त्र का इतिहास – सामान्य परिचय, प्रमुख आचार्य एवं उनके सिद्धान्त।

इकाई–2

रस सिद्धान्त– रस– अर्थ और स्वरूप, रसावयव, रसानुभूति की प्रक्रिया, रसानुभूति का स्वरूप, करुण का आस्वाद।

भरत का रससूत्र और उसके प्रमुख व्याख्याकार, रस निष्पति, साधारणीकरण, हिन्दी के आचार्यों– रामचन्द्र शुक्ल और नगेन्द्र की रस विवेचनाएँ, सहृदय की अवधारणा।

इकाई–3

अलंकार सिद्धान्त – अलंकार का अर्थ, लक्षण, स्वरूप, महत्त्व, प्रमुख आचार्य एवं अलंकार सम्प्रदाय की स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण, अलंकार और अलंकार्य।

रीति सिद्धांत – अर्थ और स्वरूप, रीतियों के प्रमुख भेद, रीति सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ, काव्य गुण, रीति और शेली।

वक्रोक्ति सिद्धान्त – वक्रोक्ति का अर्थ, लक्षण, स्वरूप, भेदोपभेद, वक्रोक्ति सिद्धान्त और उसकी स्थापनाएँ, वकोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद।

इकाई–4

ध्वनि सिद्धान्त – ध्वनि का अर्थ और स्वरूप, भेद–प्रभेद, प्रमुख आचार्य (परम्परा), काव्य की आत्मा मानने के पक्ष में तर्क, प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के भेद।

औचित्य सिद्धान्त – अर्थ, स्वरूप, महत्त्व, भेद एवं प्रमुख स्थापनाएँ।

इकाई–5

काव्यरूप – साहित्य के रूप, काव्य भेद, प्रबंध, मुक्तक, महाकाव्य, खण्डकाव्य, चंपू काव्य, गीतिकाव्य।

गद्य प्रबन्ध – नाटक, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, शब्दचित्र, रिपोर्ताज, जीवनी, आत्मकथा, निबंध।

आलोचना – आलोचना का अर्थ, स्वरूप, महत्त्व, आलोचक के गुण एवं आलोचना की पद्धतियाँ।

सहायक ग्रंथ–

1. साहित्यालोचन : श्यामसुन्दर दास
2. भारतीय काव्य शास्त्र : पं. बलदेव उपाध्याय
3. रस सिद्धान्त : डॉ. नगेन्द्र
4. रस मीमांसा : रामचन्द्र शुक्ल
5. साहित्य शास्त्र : रामशरणदास
6. हिन्दी काव्यशास्त्र की भूमिका : राममूर्ति त्रिपाठी
7. काव्यशास्त्र का इतिहास : डॉ. भगीरथ मिश्र
8. भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन : विश्वम्भरनाथ उपाध्याय
9. हिन्दी आलोचना के बीज शब्द : बच्चन सिंह
10. हिन्दी काव्यशास्त्र के सिद्धान्त : कृष्णदेव झारी

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –द्वितीय

हिन्दी साहित्य का इतिहास : आधुनिक काल

कोर्स कोड – HIN-DCCT-203

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

उद्देश्य–

छात्र आधुनिकता के अर्थ, अभिप्रेत, व्यवहार के साथ उसके उदय और विकास को समझ सकेगा एवं आधुनिक काल के रचनात्मक पक्ष एवं साहित्य अवदान के बारे में अपनी समझ बढ़ा सकेगा।

परिणाम–

आधुनिक काल के विस्तृत कालखण्ड के प्रतिनिधि कवियों की रचना एवं रचना प्रक्रिया से अपना संबंध स्थापित कर सकेगा।

इकाई – 1

आधुनिक काल की पृष्ठभूमि, उन्मेष, परिस्थितियाँ, आधुनिकता की अवधारणा, नामकरण, सीमा निर्धारण, आधुनिक हिन्दी कविता के विकास के विभिन्न सोपान।

भारतेन्दु युग – सांस्कृतिक पुनर्जागरण, प्रमुख कवि एवं काव्य, प्रवृत्तियाँ, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का योगदान।

इकाई–2

राष्ट्रीय काव्यधारा – प्रमुख कवि, प्रवृत्तियाँ, वैशिष्ट्य

द्विवेदी युग – हिन्दी जागरण, प्रमुख कवि, काव्य, प्रमुख प्रवृत्तियाँ

इकाई–3

छायावाद – स्वछन्दतावाद और छायावाद, छायावाद नामकरण, उद्‌भव के कारण, परिस्थितियाँ, प्रमुख कवि व रचनाकार – प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा एवं प्रवृत्तियाँ।

इकाई– 4

प्रगतिवाद – प्रगतिवाद व प्रगतिशीलता, प्रगतिवाद का प्रारंभ, प्रवृत्तियाँ, उदय के कारण, वैचारिक दृष्टिकोण, प्रमुख कवि व काव्य, विशेषताएँ।

प्रयोगवाद – नामकरण, पृष्ठभूमि प्रवृत्तियाँ, तार सप्तक की प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि व काव्य।

इकाई–5

नई कविता – परिस्थितियाँ, नामकरण की सार्थकता, प्रयोगवाद व नई कविता में साम्य–वैषम्य, प्रवृत्तियाँ, वैशिष्टय, प्रमुख कवि

समकालीन कविता – परिचय, पृष्ठभूमि, परिचय, प्रमुख कवि एवं काव्य, विविध आन्दोलन एवं प्रवृत्तियाँ

सहायक ग्रंथ–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. विजयेन्द्र स्नातक
3. आधुनिक गद्य साहित्य : रामचन्द्र तिवारी
4. हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ : डॉ. नामवर सिंह
5. हिन्दी गद्य : उदभव और विकास : रामचन्द्र तिवारी
6. साहित्येतिहास की संरचना और स्वरूप : सुमन राजे
7. आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका : लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
8. हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी
9. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. बच्चनसिंह
10. समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध विमर्श : श्रीराम शर्मा

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –तृतीय

आधुनिक हिन्दी काव्य–प्रथम

कोर्स कोड – HIN-DCCT-204

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

आधुनिक हिन्दी काव्य–प्रथम

इकाई–1

उद्देश्य–

छात्र आधुनिक काव्य के इतिहास का परिचय प्राप्त कर सकेगा और हिन्दी की आधुनिक काव्य परम्परा सम्बन्धी समझ की विकास की राह आसान होगी।

परिणाम–

आधुनिक काव्य के प्रमुख रचनाकारों एवं उनकी कृतियों के साथ छात्र का सहज सम्बन्ध विकसित होगा और आधुनिक हिन्दी की प्रबन्ध काव्य परम्परा को आत्मसात करने में मदद मिलेगी।

साकेत (नवम् सर्ग) – मैथिलीशरण गुप्त

इकाई– 2

कामायनी (चिंता, लज्जा, श्रद्धा) – जयशंकर प्रसाद

इकाई– 3

कुरूक्षेत्र (छठा सर्ग) – रामधारीसिंह दिनकर

इकाई– 4

संशय की एक रात – नरेश मेहता

इकाई– 5

आत्मजयी – कुँवरनारायण

सहायक ग्रंथ –

1. साकेत : एक अध्ययन : डॉ. नगेन्द्र
2. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि : डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
3. कश्मीर शैव दर्शन और कामायनी : डॉ. भवर जोशी
4. कामायनी : एक पुनर्मूल्यांकन : मुक्तिबोध
5. कामायनी सौन्दर्य : फतेहसिंह
6. युगचारण दिनकर : डॉ. सावित्री सिन्हा
7. दिनकर का काव्य : लीलधर त्रिपाठी
8. नई कविता के प्रबन्ध काव्य : शिल्प और जीवन दर्शन : डॉ. उमाकान्त
9. कुँवर नारायण की काव्यकला : डॉ. रेखा सेठी ईपीजी पाठशाला की पाठ्य सामग्री

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –तृतीय

हिन्दी कथा साहित्य एवं नाटक

कोर्स कोड – HIN-DCCT-205

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

हिन्दी कथा साहित्य एवं नाटक

उद्देश्य–

छात्र आधुनिक हिन्दी के साहित्य इतिहास में गद्य साहित्य के अन्तर्गत कथा एवं उपन्यास के परम्परा के नैरन्तर्य से परिचित हो सकेगा।

परिणाम–

हिन्दी के प्रमुख गद्यकारों की उपस्थिति, रचनात्मक प्रक्रिया और उससे निकले मूल्यबोध के साथ छात्र अपना सम्बन्ध स्थापित कर सकेगा।

इकाई– 1

गोदान – प्रेमचन्द

इकाई– 2

शेखर एक जीवनी : भाग–1, 2 – अज्ञेय

इकाई– 3

आधे–अधूरे – मोहन राकेश

इकाई– 4

गुण्डा – जयशंकर प्रसाद

कफन – प्रेमचन्द

सेब और देव – अज्ञेय

पंचलाईट – फणीश्वरनाथ रेणु

वापसी – उषा प्रियंवदा

सेब– रघुवीर सहाय

इकाई– 5

जहाँ लक्ष्मी कैद है– राजेन्द्र यादव

दिल्ली में एक मौत – कमलेश्वर

परिन्दें – निर्मल वर्मा

सिक्का बदल गया – कृष्णा सोबती

पिता – ज्ञानरंजन

ठण्डक – महीप सिंह

सहायक ग्रंथ –

1. हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा : रामदरश मिश्र
2. आज का हिन्दी उपन्यास : इन्द्रनाथ मदान
3. हिन्दी उपन्यास : उपलब्धियाँ : डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
4. गोदान : अध्ययन की समस्याएँ, गोपाल राय
5. प्रेमचन्द के उपन्यासों का शिल्प विधान : कमलकिशोर गोयनका
6. प्रेमचन्द विश्वकोश (दो खण्ड) : कमलकिशोर गोयनका
7. शेखर : एक जीवनी विविध आयाम : सम्पादक : रामकमल राय

8. अज्ञेय : रमेशचन्द्र शाह
9. अज्ञेय, : एक अध्ययन : भोलाभाई पटेल
10. नाट्य कला : डॉ. रघुवंश
11. मोहन राकेश के सम्पूर्ण नाटक : नेमीचन्द जैन
12. आधे–अधूरे नाटक की संवेदना एवं शिल्प : गरिमा
13. नाटक और रंगमंच : ईपीजी पाठशाला की पाठ्य सामग्री
14. कहानी : नई कहानी : डॉ. नामवर सिंह
15. हिन्दी कहानी : समीक्षा एवं सन्दर्भ : विवेकी राय
16. हिन्दी कहानी : एक अन्तरंग पहचान, रामदरश मिश्र

परीक्षा एवं मूल्यांकन योजना–

- परीक्षा प्रश्न पत्र 03 घण्टे की अवधि का होगा।
- कुल मूल्यांकन 150 अंकभार का रहेगा, जिसमें 120 अंक की लिखित परीक्षा होगी तथा 30 अंक का आन्तरिक मूल्यांकन होगा।
- 120 अंकों के उपर्युक्त परीक्षा सेमेस्टर के अंत में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस सेमेस्टर परीक्षा का प्रत्येक प्रश्न पत्र 3 खण्डों (अ–ब–स) में निम्नानुसार विभक्त होगा।
- खण्ड 'अ' (20 अंक) में कुल 10 प्रश्न होगें, प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त–स्थान–पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
- खण्ड 'ब' (40 अंक) मे 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से 1 प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अंकों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
- खण्ड 'स' (60 अंक) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अंको का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –तृतीय

COURSE CODE- SDC-T301

Basic Comminication Skills

or

Basic Computer Course

or

Seminar + Academic Writing

परीक्षा एवं मूल्यांकन योजना–

यह एक Non CGPA Course है। अतः विश्वविद्यालय द्वारा सैद्धान्तिक परीक्षा आयोजित नहीं की जाएगी। केवल महाविद्यालय स्तर पर छात्र का सतत आन्तरिक मूल्यांकन होगा और सत्रांत में एक आन्तरिक वाक्परीक्षा (Viva) करके मात्र ''संतोषजनक'' या ''असंतोषजनक'' प्रत्यय (क्रेडेंशियल्स) ही विश्वविद्यालय को प्रेषित किया जाएगा।

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –तृतीय

आधुनिक हिन्दी काव्य–द्वितीय

कोर्स कोड – HIN-DCC-T302

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

आधुनिक हिन्दी काव्य–द्वितीय

उद्देश्य–

छात्र आधुनिक हिन्दी कविता के प्रबन्ध अतिरिक्त काव्य परम्परा के प्रमुख पड़ावों की जानकारी तो प्राप्त करेगा ही, साथ ही आधुनिक हिन्दी काव्य परम्परा के क्रमिक विकास की परम्परा को भी जान–समझ सकेगा।

परिणाम–

आधुनिक हिन्दी के प्रमुख कवियों एवं उनकी उपस्थिति, रचनात्मक प्रक्रिया और उससे निकले मूल्यबोध के साथ छात्र अपना सम्बन्ध स्थापित कर सकेगा।

आधुनिक हिन्दी काव्य की दीर्घ कविता परम्परा से भी छात्र का परिचय बढ़ेगा एवं प्रमुख दीर्घ कविताओं के अध्ययन के जरिए वह कवि और कविता के योगदान को समझ सकेगा।

इकाई –1

'भारत भारती' का अंश अतीत खण्ड – मैथिलीशरण गुप्त

कैदी और कोकिला – माखनलाल चतुर्वेदी

इकाई –2

राम की शक्ति पूजा – सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

प्रिय सांध्य गगन, कौन तुम मेरे हृदय में – महादेवी वर्मा

इकाई –3

बादल को घिरते देखा, अकाल और उसके बाद – नागार्जुन

समय देवता – नरेश मेहता

इकाई –4

असाध्य वीणा– अज्ञेय

अँधेरे में– मुक्तिबोध

इकाई –5

आत्महत्या के विरूद्ध, हँसो, हँसो जल्दी हँसो – रघुवीर सहाय

सात भाइयों के बीच चंपा, हॉकी खेलती लड़कियाँ – कात्यायनी

सहायक ग्रंथ –

1. आधुनिक हिन्दी काव्य : सत्यनारायण सिंह
2. अज्ञेय : एक अध्ययन : भोलाभाई पटेल
3. रघुवीर सहाय की काव्य यात्रा : सुधा उपाध्याय, ई–अध्ययन पर उपलब्ध
4. नागार्जुन : अभिजात का क्लासिक : विजयबहादुर सिंह
5. नागार्जुन संवाद : विजयबहादुर सिंह
6. मैथिलीशरण गुप्त : नन्दकिशोर नवल
7. माखनलाल चतुर्वेदी का रचना संसार : डॉ. बद्रीप्रसाद बिरमाल
8. महादेवी : विचार और व्यक्तित्व : शिवचन्द्र सागर
9. महादेवी की काव्य साधना : शिवमंगल सिंह सुमन
10. निराला की साहित्य साधना, भाग–1 व 2 : रामविलास शर्मा

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –तृतीय

पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त एवं वाद

कोर्स कोड – HIN-DCCT-303

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त एवं वाद

उद्देश्य–

छात्र पाश्चात्य काव्य शास्त्रीय परम्परा का परिचय, उद्‌भव, विकास तो जानेगे ही, साथ ही उनके प्रमुख काव्यशास्त्रीय विचारकों के विचारों से भी अवगत हो सकेंगे।

परिणाम–

पाश्चात्य काव्य परम्परा के प्रतिनिधि मतों का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे, उनके वैशिष्ट्य एवं रचनात्मक प्रक्रिया में उनके महत्त्व और अवदान को भली–भाँति जान–समझ सकेंगे।

इकाई–1

प्लेटो – काव्य सम्बन्धी विचार

अरस्तू – अनुकृति, विरेचन और त्रासदी सिद्धान्त के साथ प्लेटो एवं अरस्तू के साहित्यिक चिन्तन में साम्य–वैषम्य

इकाई–2

लौजाइन्स – उदात्त तत्त्व का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, महत्त्व एवं प्रमुख मान्यताएँ

क्रोंचे – अभिव्यंजनावाद

इकाई–3

कॉलरिज – कल्पना सिद्धान्त

वर्ड्सवर्थ – काव्यभाषा सिद्धान्त

इकाई–4

टी.एस इलियट – परम्परा और वैयक्तिक प्रतिभा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त, और वस्तुनिष्ठ समीकरण

आई.ए.रिचर्ड्स – सम्प्रेषण सिद्धान्त, मूल्य सिद्धान्त और व्यावहारिक आलोचना

इकाई–5

स्वच्छंदतावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, यथार्थवाद, पश्चिमी आलोचना पद्धतियाँ, नई समीक्षा, उत्तर आधुनिकता, संरचनावाद, शैली विज्ञान, विखण्डनवाद।

सहायक ग्रंथ

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास : तारकनाथ बाली
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : देवेन्द्रनाथ शर्मा
3. पाश्चात्य साहित्य चिन्तन : निर्मला जैन
4. पाश्चात्य आलोचना : विश्वनाथ त्रिपाठी
5. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र : गणपतिचन्द्र गुप्त
6. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त : डॉ. शान्तिस्वरूप गुप्त
7. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : अधुनातन संदर्भ : डॉ. सत्यदेव मिश्र
8. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धान्त और वाद : भगीरथ मिश्र
9. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा : रामचन्द्र तिवारी
10. पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा : डॉ. नगेन्द्र एवं डॉ. सावित्री सिन्हा

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –तृतीय

अस्मिता विमर्श और हिन्दी साहित्य

कोर्स कोड – HIN-DSE-T-304 (A)

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

अस्मिता विमर्श और हिन्दी साहित्य

उद्देश्य –

छात्र अस्मिता की अवधारणा, स्वरूप एवं विकास के साथ–साथ अस्मिता विमर्श की प्रमुख प्रवृत्तियाँ– स्त्री विमर्ष, दलित विमर्ष, आदिवासी विमर्श की पहचान और परख में सक्षम हो सकेगा।

परिणाम–

छात्र गद्य की विविध विधाओं क्रमशः कहानी, उपन्यास और आत्मकथा के साथ–साथ कविता के प्रमुख रचनाकारों एवं कृतियों के साथ अपना परिचय तो बढ़ाएगा ही साथ ही श्रेष्ठ साहित्य से भी उसका परिचय बढ़ेगा।

इकाई – 1

अस्मिता विमर्श से अभिप्राय, अवधारणा एवं स्वरूप विकास

प्रमुख विमर्शों का अवधारणात्मक परिचय, स्वरूप एवं विकास के साथ प्रवृत्तियों का अध्ययन : स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श

इकाई–2

आत्मकथा

अन्या से अनन्या : प्रभा खेतान

जूठन – भाग एक : ओमप्रकाश वाल्मीकि

इकाई –3

उपन्यास –

बेघर : ममता कालिया

छप्पर : जयप्रकाश कर्दम

इकाई –4

कविता

स्त्रियाँ : अनामिका

उतनी दूर मत ब्याहना बाबा! : निर्मला पुत्तुल

एक भ्रूण की आत्मकथा : रंजना जायसवाल

इकाई–5

दूध का टीका : सूर्यबाला

दत्तक पिता : मृदुला सिन्हा

साजिष : सूरजपाल चौहान

अपना गाँव : मोहनदास नैमिशराय

सूरज क्यों निकलता है : सुधा ओम ढींगरा

फुटबॉल : पूर्णिमा बर्मन

इज्जत : शिशिर टुडू

सहायक ग्रंथ –

स्त्रीत्व का मानचित्र	: अनामिका
स्त्री विमर्श : भारतीय परिप्रेक्ष्य	: के.एम. मालती
दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र	: ओम प्रकाश वाल्मिकी
दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र	: शरण कुमार लिम्बाले
आदिवासी संघर्ष गाथा	: विनोद कुमार
विश्व हिन्दी रचना	: सं. कमल किशोर गोयनका
भारत का स्त्री विमर्श	: कुसुमलता केडिया

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –तृतीय

हिन्दी उपन्यास

कोर्स कोड – HIN-DSE-T-304 (B)

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

हिन्दी उपन्यास

उद्देश्य–

छात्र हिन्दी उपन्यास साहित्य के रचनात्मक उत्कर्ष और पड़ावों को भली–भाँति समझ सकेंगे।

परिणाम–

छात्र उपन्यास साहित्य के प्रतिनिधि उपन्यासकारों की कृतियों का सम्यक् पठन–पाठन कर उनसे उपजे मूल्यबोध से अपनी समझ सम्पन्न कर सकेंगे।

इकाई – 1

बाणभट्ट की आत्मकथा : हजारीप्रसाद द्विवेदी

इकाई – 2

मैला आँचल : फणीश्वर नाथ रेणु

इकई–3

गुनाहों का देवता : धर्मवीर भारती

इकाई–4

राग दरबारी : श्रीलाल शुक्ल

इकाई–5

आपका बंटी : मन्नू भण्डारी

सहायक ग्रंथ–

1. हिन्दी उपन्यास : सुषमा प्रियदर्शिनी
2. हिन्दी उपन्यास : बदलते सन्दर्भ : शशिभूषण सिंहल
3. हिन्दी के आंचलिक उपन्यास : सिद्धान्त और समीक्षा, बंशीधर
4. हिन्दी उपन्यास का इतिहास : गोपाल राय
5. उपन्यास की संरचना : गोपाल राय
6. उपन्यास और लोक जीवन : रैल फॉक्से

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –तृतीय

हिन्दी नाटक एवं रंगमंच

कोर्स कोड – HIN-DSE-T-305 (A)

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

हिन्दी नाटक एवं रंगमंच

उद्देश्य–

छात्र हिन्दी नाटक एवं रंगमंच की परम्परा, इतिहास, स्वरूप और महत्त्व को जान–समझ सकेंगे।

परिणाम–

प्रतिनिधि नाटककारों के नाट्यसाहित्य के प्रतिनिधि ग्रंथों के माध्यम से हिन्दी नाटक के क्रमिक एवं प्रायोगिक विकास के साथ कथ्य और शिल्प के साथ रंगमंचीयता से भी परिचित हो सकेंगे।

इकाई–1

हिन्दी नाटक का उद्‌भव एवं विकास, रंगमंच की परम्परा और प्रयोग

इकाई–2

भारत दुर्दशा, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

इकाई–3

ध्रुवस्वामिनी, जयशंकर प्रसाद

इकाई–4

बकरी, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

इकाई–5

सम्राट अशोक, दयाप्रकाश सिन्हा

सहायक ग्रंथ

1. हिन्दी नाटक का उद्‌भव और विकास : दशरथ ओझा
2. हिन्दी नाटक का आत्मसंघर्ष : गिरीश रस्तोगी
3. नाटककार भारतेन्दु : नये संदर्भ, नये विमर्श : सं. रमेश गौतम
4. जयशंकर प्रसाद : रंगसृष्टि, भाग 1–2 : महेश आनन्द
5. रंगमंच के सिद्धान्त : महेश आनन्द और देवेन्द्रराज अंकुर
6. रंगमंच का सौन्दर्यशास्त्र : देवेन्द्रराज अंकुर
7. बीसवीं सदी में हिन्दी नाटक एवं रंगमंच : गिरीश रस्तोगी
8. हिन्दी नाट्यशास्त्र का स्वरूप : नर्मदेश्वर राय

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –तृतीय

हिन्दी आलोचना

कोर्स कोड – HIND-DSE-T-305 (B)

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

हिन्दी आलोचना

उद्देश्य–

छात्र हिन्दी आलोचना के विविध आयामों से परिचय प्राप्त कर अपनी विश्लेषण क्षमता का विकास कर सकेंगे।

परिणाम–

प्रतिनिधि आलोचना पद्धतियों एवं आलोचकों की मान्यताओं से अपनी समझ एवं परख क्षमता का पर्याप्त विकास कर सकेंगे।

इकाई – 1

1. हिन्दी आलोचना का उद्‌भव एवं विकास, हिन्दी आलोचना की पृष्ठभूमि
2. आलोचना और काव्यशास्त्र, हिन्दी आलोचना और अनुसंधान, समीक्षा और आलोचना

इकाई – 2

3. आलोचना और सौंदर्यशास्त्र, हिन्दी के प्रमुख आलोचक एवं उनकी पद्धतियाँ
   (क) भारतेन्दु की आलोचना पद्धति
   (ख) महावीरप्रसाद द्विवेदी आलोचना पद्धति

इकाई – 3

4. (क) रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना पद्धति

(ख) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना पद्धति

(ग) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी की आलोचना पद्धति

इकाई – 4

5. (घ) नगेन्द्र की आलोचना पद्धति

(ड़) रामविलास शर्मा की आलोचना पद्धति

(च) डॉ. नामवर सिंह की आलोचना पद्धति

6. हिन्दी की कवि आलोचना

(क) पंत (ख) प्रसाद (ग) निराला

(घ) अज्ञेय (ड़) मुक्तिबोध (च) दिनकर

(छ) विजयदेव नारायण साही

इकाई – 5

7. आलोचना के महत्त्वपूर्ण बीज शब्द : वस्तुवाद, शास्त्रवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, आधुनिकतावाद, उत्तर–आधुनिकता संरचनावाद, विखण्डनवाद शैली विज्ञान।

8. कथालोचन : परम्परा और विकास और सामान्य परिचय।

संदर्भ ग्रंथ :–

1.	संरचनावाद, उत्तरसंरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र	: गोपीचंद नारंग
2.	साहित्य और इतिहास दृष्टि	: डॉ. मैनेजर पाण्डेय
3.	साहित्य का समाजशास्त्रीय चिन्तन	: सं. डॉ. निर्मला जैन
4.	साहित्य का समाजशास्त्र	: डॉ. नगेन्द्र
5.	शैली तत्त्व : सिद्धान्त और व्यवहार	: डॉ.चन्द्रभानसिंह रावत और दिलीपसिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली
6.	आखिर रचना क्यों	: मुक्तिबोध
7.	सोसियोलोजी ऑफ लिट्रेचर	: जॉन हॉल
8.	पोस्ट मॉडर्निज्म एण्ड कल्चरल लॉजिक ऑफ लेट कैपिटलिज्म	: फ्रेड्रिक जैक्सन
9.	पोस्ट मॉडर्निज्म	: टैरी इगल्टन
10.	आर्ट एण्ड सोसाइटी	: एडाल्को सांचेज बास्वबेल
11.	शैली विज्ञान : प्रकार और प्रतिमान	: डॉ. पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु
12.	शैली विज्ञान और पाश्चात्य एवं भारतीय साहित्यशास्त्र	: डॉ.राघवप्रकाश, राज.हिन्दी ग्रंथ अका.
13.	शैली विज्ञान	: डॉ. नगेन्द्र
14.	पाश्चात्य काव्यशास्त्र : आधुनिक संदर्भ	: सत्यदेव मिश्र, लोकभारती प्रकाशन
15.	आलोचना और आलोचना	: देवीशंकर अवस्थी, वाणी प्रकाशन,दिल्ली
16.	आलोचना और आलोचक	: डॉ.बच्चनसिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली
17.	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना	: डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
18.	हिन्दी आलोचना की परम्परा और रामचन्द्र शुक्ल	: डॉ.शिवकुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
19.	हिन्दी आलोचना	: विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली
20.	साहित्य का समाजशास्त्र	: डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

21. आलोचना के आधार स्तम्भ : सं. रामेश्वर खण्डेलवाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
22. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका : डॉ. मैनेजर पाण्डेय
23. आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली : डॉ. अमरनाथ
24. आलोचना के बीज शब्द : डॉ. बच्चन सिंह

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –तृतीय

राजस्थान का हिन्दी साहित्य

कोर्स कोड – HIN-DSE-T-305 (C)

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

राजस्थान का हिन्दी साहित्य

उद्देश्य–

छात्र इस अध्ययन सामग्री के अध्ययन पश्चात् राजस्थान में हिन्दी साहित्य के विकास एवं स्वरूप और शेष हिन्दी परम्परा के समक्ष उसकी सक्षम उपस्थिति को जान समझ सकेंगे।

परिणाम–

छात्र विविध विधाओं में राजस्थान के हिन्दी लेखकों के प्रतिनिधि लेखन से तो परिचय प्राप्त करेंगे ही, वे समकालीन परिदृश्य के आकलन में भी सक्षम हो सकेंगे, साथ ही अपने प्रदेश के सांस्कृतिक एवं रचनात्मक गौरव से भी अपना परिचय बढ़ा एवं परिणाम गहरा सकेंगे।

इकाई–1

राजस्थान की हिन्दी कविता

इकाई–2

राजस्थान की हिन्दी कहानी

इकाई–3

राजस्थान का उपन्यास साहित्य

इकाई–4

राजस्थान का नाटक साहित्य

इकाई–5

राजस्थान की आलोचना एवं विविध साहित्य

आधार ग्रंथ –

1. राजस्थान का हिन्दी साहित्य, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

सहायक ग्रंथ –

2. राजस्थान का स्वातन्त्रयोतर हिन्दी उपन्यास : देवदत्त शर्मा
3. राजस्थान की हिन्दी कविता : प्रकाश आतुर
4. सृजन के परिप्रेक्ष्य : दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
5. तनी हुई रस्सी पर : माधव हाड़ा
6. राजस्थान का डायरी साहित्य : कौशल्या सेन
7. राजस्थान का समकालीन कथा साहित्य : लक्ष्मीकान्त शर्मा
8. आधुनिक रंग नाटक : सं. मदनमोहन माथुर

परीक्षा एवं मूल्यांकन योजना–

- परीक्षा प्रश्न पत्र 03 घण्टे की अवधि का होगा।
- कुल मूल्यांकन 150 अंकभार का रहेगा, जिसमें 120 अंक की लिखित परीक्षा होगी तथा 30 अंक का आन्तरिक मूल्यांकन होगा।
- 120 अंकों के उपर्युक्त परीक्षा सेमेस्टर के अंत में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस सेमेस्टर परीक्षा का प्रत्येक प्रश्न पत्र 3 खण्डों (अ–ब–स) में निम्नानुसार विभक्त होगा।
- खण्ड 'अ' (20 अंक) में कुल 10 प्रश्न होगें, प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त–स्थान–पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

- खण्ड 'ब' (40 अंक) मे 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से 1 प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अंकों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
- खण्ड 'स' (60 अंक) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अंको का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –चतुर्थ

General Health and Hygiene

Course Code- AEC-T 401

परीक्षा एवं मूल्यांकन योजना–

यह एक Non CGPA Course है। अतः विश्वविद्यालय द्वारा सैद्धान्तिक परीक्षा आयोजित नहीं की जाएगी। केवल महाविद्यालय स्तर पर छात्र का सतत आन्तरिक मूल्यांकन होगा और सत्रांत में एक आन्तरिक वाक्परीक्षा (Viva) करके मात्र ''संतोषजनक'' या ''असंतोषजनक'' प्रत्यय (क्रेडेंशियल्स) ही विश्वविद्यालय को प्रेषित किया जाएगा।

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –चतुर्थ

भाषा विज्ञान

कोर्स कोड – HIN-DSE-T402

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

भाषा विज्ञान –

उद्देश्य–

इस अध्ययन सामग्री के पश्चात छात्र में भाषा विज्ञान की अवधारणा, महत्त्व अन्य ज्ञान शाखाओं से उसका संबंध एवं भाषा विज्ञान की परम्परा, स्वरूप और विषय संबंधी बोध का विकास होगा।

परिणाम–

छात्र भाषा विज्ञान की विषयगत गहराई एवं भाषा की वैज्ञानिकता के साथ उसकी वैज्ञानिकता को सिद्ध करने वाले सिद्धान्तों एवं उनकी प्रक्रिया का अवबोध तो करेंगे ही, साथ ही भाषा विज्ञान विषय की तकनीकी संरचना की समझ विकसित कर सकेंगे।

इकाई–1

भाषा और भाषा विज्ञान :–

1. भाषा तथा विज्ञान की परिभाषा, भाषा का महत्त्व
2. भाषा की प्रकृति तथा अन्य ज्ञान शाखाओं से भाषा विज्ञान का संबंध
3. भाषा विज्ञान में अध्ययन के विभाग
4. भाषा की उत्पत्ति तथा संसार की भाषाओं का वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं पारिवारिक)

इकाई–2

ध्वनि विज्ञान :–

1. ध्वनि की परिभाषा और उसका वैज्ञानिक आधार एवं विश्लेषण
2. ध्वनि का वर्गीकरण, ध्वनि परिवर्तन के कारण एवं दिशाएं।
3. ध्वनि परिवर्तन के प्रकार, बलाघात।
4. ध्वनि नियम, ग्रिम नियम, ग्रासमान नियम, बर्नर नियम, तालव्य भाव नियम
5. हिन्दी से संबद्ध विशिष्ट ध्वनि नियमों का व्यावहारिक ज्ञान।

रूप विज्ञान :–

1. शब्द और उसकी निर्माण पद्धति।
2. पद निर्माण पद्धति और उसके भेद
3. संबंधतत्त्व के विविध प्रकार।
4. संबंधतत्त्व एवं अर्थ तत्त्व।
5. रूप परिवर्तन की दिशाएँ।

इकाई–3

वाक्य विज्ञान :–

1. वाक्य की परिभाषा
2. वाक्य विश्लेषण
3. वाक्य के प्रकार

अर्थ विज्ञान –

अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ विज्ञान का क्षेत्र, अर्थ परिवर्तन के कारण, अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ, बौद्धिक नियम।

प्राचीन एवं मध्यकालीन आर्य भाषाएँ वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश भाषाएँ।

इकाई–4

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ –

1. भौगोलिक परिचय
2. वर्गीकरण और तत्संबंधी विविधता
3. भाषा वैज्ञानिक परिचय
4. हिन्दी का नामकरण, क्षेत्र, उप–भाषाएँ बोलियाँ, हिन्दी का उद्‌भव और विकास।

इकाई–5

लिपि व देवनागरी लिपि :–

1. भाषा एवं लिपि का संबंध और विकास लिपि अर्थ और स्वरूप।
2. भारत की प्राचीन लिपियाँ (ब्राह्मी, खरोष्ठी) ।
3. देवनागरी लिपि उत्पत्ति, नामकरण और विकास की विभिन्न स्थितियाँ, वैज्ञानिकता और गुण–दोष, विशेषताएँ, नागरी लिपि में संशोधन के प्रस्ताव, (लिपि–सुधार आन्दोलन) और मानकीकरण, मानक स्वरूप और हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण।

हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि :–

1. वर्ण, अक्षर और ध्वनि ।
2. हिन्दी वर्णमाला (स्वर और व्यंजन)
3. स्वरों का वर्गीकरण, व्यंजनों का वर्गीकरण, हिन्दी की प्रचलित ध्वनियाँ।

सहायक ग्रन्थ–

1. सामान्य भाषा विज्ञान : डॉ. शिवशंकर प्रसाद
2. भाषा विज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद
3. भाषा विज्ञान की भूमिका : देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
4. हिन्दी निरुक्त : किशोरीदास वाजपेयी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5. हिन्दी भाषा का इतिहास : डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद।
6. हिन्दी भाषा का उद्‌भव और विकास : डॉ. उदयनारायण तिवारी।

7. भारतीय आर्य भाषाओं का इत्तिहास : डॉ.जगदीश प्रसाद दीक्षित, अपोलो प्रकाशन,जयपुर
8. हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक व्याकरण : डॉ. मातादयाल जायसवाल
9. नागरी लिपि और उसकी समस्याएँ : डॉ. नरेश सिंह, मंथन पब्लिकेशन, रोहतक
10. हिन्दी भाषा : डॉ. हरदेव बाहरी
11. हिन्दी भाषा : डॉ. भोलानाथ तिवारी
12. व्यावहारिक सामान्य हिन्दी : डॉ. राघव प्रकाश
13. हिन्दी भाषा और उसका विकास : हनुमानप्रसाद शुक्ल
14. हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि का इतिहास : प्राज्ञ कुमार शर्मा
15. राष्ट्रभाषा हिन्दी : समस्याएं और समाधान : देवेन्द्रनाथ शर्मा, लोकभारती, प्रकाशन, इलाहाबाद
16. भाषा विज्ञान और भाषा शास्त्र : डॉ. कपिल देव द्विवेदी
17. हिन्दी भाषा और नागरी लिपि : डॉ. भोलानाथ तिवारी
18. देवनागरी लिपि : देवेन्द्र नाथ शर्मा
19. हिन्दी भाषा का मानक विकास : धीरेन्द्र शर्मा
20. मानक हिन्दी की व्याकरणिक विशेषताएँ : देवेन्द्रनाथ शर्मा
21. भाषा विज्ञान : डॉ. बहादुर सिंह
22. भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा : डॉ. रुपाली चौधरी

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –चतुर्थ

हिन्दी का कथेत्तर साहित्य

कोर्स कोड – HIN-DSE-T-403

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

हिन्दी का कथेत्तर साहित्य –

उद्देश्य–

कथेतर साहित्य के प्रतिनिधि रचनाकारों के रचनाकर्म के प्रति जागरूकता का विकास होगा और छात्र कथेतर साहित्य के महत्त्व को आत्मसात कर सकेंगे।

परिणाम–

कथेतर साहित्य के विविध विधाओं के प्रतिनिधि ग्रंथों से छात्र का परिचय सघन होगा और वे गद्य के इस अनूठे स्वरूप की विविध छटाओं को विविध विधाओं के माध्यम से जान–समझ कर आस्वादन करते हुए अपने जीवन दर्शन को परिपक्व बना पाएँगे।

इकाई–1

जीवनी : आवारा मसीहा, विष्णु प्रभाकर

इकाई–2

यात्रा वृत्तान्त : चीड़ों पर चाँदनी, निर्मल वर्मा

इकाई–3

आत्मकथा : अपनी खबर, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

इकाई–4

संस्मरण : अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा

इकाई–5

डायरी : कवि मन, अज्ञेय

सहायक ग्रंथ –

1. हिन्दी का गद्य साहित्य : रामचन्द्र तिवारी
2. आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य का विकास और विश्लेषण : विजयमोहन सिंह
3. हिन्दी गद्य : विन्यास और विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी
4. बीसवीं शताब्दी का हिन्दी साहित्य : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
5. साहित्यिक विधाएँ : पुनर्विचार : हरिमोहन

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –चतुर्थ

लघुशोध प्रबन्ध / परियोजना/क्षेत्र अध्ययन (DPR) Cousr Code- HIN-DPR-404 (A)

OR Internship / On Job Training (OJT) HIN-OJT-404 (B)

Or Research Credit Course HIN-RCC-404 (C)

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित – 240

आन्तरिक मूल्यांकन – 60

पूर्णांक – 300

लघुशोध प्रबन्ध / परियोजना/क्षेत्र अध्ययन (DPR)

उद्देश्य –

छात्र में शोध के प्रति बोध एवं जिज्ञासा का परिष्कार होगा और शोध दृष्टि के विकास से वैज्ञानिक दृष्टिकोण को गति मिलेगी।

परिणाम –

ज्ञान उत्पादन की प्रक्रिया से परिचय होने पर रचनात्मक तेज के विकास का मार्ग खुलेगा साथ ही नवीन दृष्टिबोध से ज्ञानात्मक एवं संवेदनात्मक अन्वेषण की प्रवृत्ति विकसित हो सकेगी।

परियोजना कार्य –

इस विकल्प में विद्यार्थी को निर्धारित चार इकाइयों में से एक का चयन करते हुए उस क्षेत्र पर शोधपरक दृष्टि से कार्य करना होगा।

इकाई–1

1. भाषा सर्वेक्षण व मूल्यांकन स्थानीय भाषाओं व बोलियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन

अथवा

केन्द्रीय संस्थानों में हिन्दी व्यवहार और समस्याएँ विश्लेषणात्मक अध्ययन।

इकाई–2

पुस्तक समीक्षा :–

प्रतिष्ठित रचनाकार की प्रकाशित कृति (विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक द्वारा अनुमोदित) के अतिरिक्ति साहित्य अकादमी, दिल्ली, राजस्थान हिन्दी साहित्य अकादमी, उदयपुर एवं विभिन्न राज्यों की अकादमियों से पुरस्कृत एवं प्रकाशित कृतियों में से किसी एक का समीक्षात्मक अध्ययन।

इकाई–3

अनुवाद :–

अंग्रेजी अथवा राजस्थानी भाषा की कृति का हिन्दी अनुवाद प्रतिष्ठित रचनाकार की प्रकाशित कृति (विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक द्वारा अनुमोदित) के अतिरिक्ति साहित्य अकादमी, दिल्ली, राजस्थान हिन्दी साहित्य अकादमी, उदयपुर एवं विभिन्न राज्यों की अकादमियों से पुरस्कृत्त एवं प्रकाशित कृतियों रचनाओं में से किसी एक का अनुवाद।

इकाई–4

भेंटवार्ता :–

प्रतिष्ठित रचनाकार (विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक द्वारा अनुमोदित) के अतिरिक्त साहित्य अकादमी, दिल्ली, राजस्थान हिन्दी साहित्य अकादमी, उदयपुर एवं विभिन्न राज्यों की अकादमियों से पुरस्कृत रचनाकार से विचारपरक भेंटवार्ता ।

विशेष निर्देश –

1. लघुशोध हेतु विषय प्रभारी एवं निर्देशक ही तय करेंगे। निर्देशक के अधीन रहते हुए शोधार्थी को अपना शोध कार्य सम्पन्न करना होगा। परियोजना/शोधकार्य/क्षेत्र अययन सभी कार्य टंकित ही स्वीकार्य होंगे।
2. शोधार्थी को लघुशोध अधिकतम 100 पृष्ठों में लिखना होगा। पृष्ठ आगे–पीछे गिने जाएँगे। शोधार्थी अपना शोधकार्य स्पाईरल बाईड़िग के साथ चार प्रतियाँ प्रस्तुत करेंगे।
3. शोधकार्य/परियोजना कार्य/क्षेत्र अध्ययन केवल नियमित विधार्थियों के लिए ही उपलब्ध रहेंगे। स्वयंवाठी के लिए नहीं।

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –चतुर्थ

हिन्दी भाषा एवं साहित्य – विविध आयाम

प्रयोजनमूलक हिन्दी

कोर्स कोड – HIN-DCC-T 404 (A)

समय 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

उद्देश्य–

छात्र प्रयोजनमूलक हिन्दी की आवश्यकताओं, विशेषताओं और भूमिका के साथ भाषा के विविध रूपों से अपना संबंध स्थापित कर पाएंगे। पारिभाषिक शब्दावली से परिचय होगा और भाषा के मौखिक एवं लिखित रूपों एवं मानकीकरण के बारे में जानकारी बढ़ेगी।

परिणाम–

वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के विकास को गति मिलेगी। जनसंचार के माध्यमों में भाषा के महत्व को जान–समझ सकेंगे और प्रशासनिक प्रक्रिया में भाषा के महत्त्व, उपस्थिति और व्याप्ति के प्रति जागरूकता बढ़ेगी।

इकाई–1

प्रयोजनमूलक हिन्दी : अभिप्राय और क्षेत्र, अर्थ विस्तार, आवश्यकता और विशेषताएं

हिन्दी की भूमिकाएँ : राजभाषा, सम्पर्क भाषा, साहित्यिक भाषा, संचार भाषा, माध्यम भाषा

हिन्दी की समृद्धि एवं प्रकार, हिन्दी का वैविध्य, पारिभाषिक शब्दावली का निर्धारण, सिद्धान्त एवं सामान्य विशेषताएं।

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण, वर्गीकरण, व्युत्पादन प्रक्रिया

मौखिक एवं लिखित भाषा का स्वरूप, अन्तर

लिपि–वर्तनी का मानकीकरण

शब्द सम्पदा का मानकीकरण

आधरभूत वाक्य संरचना।

इकाई–2

जनसंचार में हिन्दी– जनसंचार माध्यम : विविध आयाम, जनसंचार साहित्य विविध भाषिक रूप, विज्ञापन और हिन्दी, संपादन कला।

इकाई–3

वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा
वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिन्दी की प्रयुक्तियाँ
वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली
पर्याय निर्धारण – शब्द निर्माण, प्रयोग
वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन

इकाई–4

प्रशासनिक पत्राचार – विविध रूप
प्रारूपण, कार्यालयी पत्राचार, संक्षेपण, पल्लवन, प्रतिवेदन

इकाई–5

अनुवाद – अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप, कार्यालयी अनुवाद, वैज्ञानिक एवं सर्जनात्मक अनुवाद की समस्याएँ, वाणिज्यिक अनुवाद, तकनीकी अनुवाद, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के अनुवाद, विधिक अनुवाद।

सहायक ग्रंथ–

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी : दंगल झाल्लटे
3. हिन्दी का प्रयोजनमूलक स्वरूप : कैलाशचन्द्र भाटिया
4. प्रयोजनमूलक कामकाजी हिन्दी : कैलाशचन्द्र भाटिया
5. हिन्दी, प्रयोजनमूलक हिन्दी और अनुवाद : पूरणचन्द टण्डन
6. सूचना प्रौद्योगिकी : हिन्दी और अनुवाद, : सं. पूरणचन्द टण्डन
7. कार्यालय में हिन्दी प्रयोग की दिशाएँ : डॉ. उमा शुक्ल

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –तृतीय

पाठालोचन

कोर्स कोड – हिन्दी FA- HIN -CF-305 B

एम.ए हिन्दी सेमेस्टर –चतुर्थ

हिन्दी भाषा एवं साहित्य – विविध आयाम

पाठालोचन

कोर्स कोड – HIN-DCC-T 404 (B)

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

उद्देश्य–

छात्र इस अध्ययन सामग्री के अध्ययन पश्चात् पाठालोचन के अर्थ, महत्त्व और साहित्य के अध्ययन में उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका का भली–भाँति परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

परिणाम–

मध्यकालीन काव्य एवं पाण्डुलिपियों के अध्ययन की राह आसान होगी एवं खोज के संस्कार का परिष्कार होगा।

छात्र पाठ विकृतियों की पहचान कर सकेंगे एवं प्रक्षिप्त पाठों के पठन की रणनीति को समझ सकेंगे।

इकाई–1

पाठालोचन– नामकरण, परिभाषा, आवश्यकता, उद्देश्य, हस्तलिखित ग्रंथों की विशेषता और पाठ संपादन के सोपान।

इकाई–2

ग्रंथानुसंधान तथा आधार सामग्री की खोज – संस्थागत सम्पर्क, व्यक्तिगत संपर्क, पाण्डुलिपियों का वंशवृक्ष निर्माण, पाठ की तिथि, निर्धारित पाठ की विकृतियाँ, कारण और विकृतियों का वर्गीकरण, प्रकार और प्रक्षिप्त पाठों की पहचान।

इकाई–3

पाठ निर्धारण और लिपि विज्ञान, पाठ निर्धारण और छन्दोंविद्या, पाठानुसंधान के लिए प्रयुक्त प्रमाणावली, लिप्यन्तरण की समस्याएँ।

इकाई–4

पाठालोचन की प्रणालियाँ, पाठ अध्ययन, पाठ सुधार और उच्चतर आलोचना।

इकाई–5

हिन्दी पाठानुसंधान का इतिहास, हिन्दी पाठानुसंधान के मानक ग्रंथ– रामचरितमानस– आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र, पद्मावत – डॉ. माताप्रसाद गुप्त, कवित्त–रत्नाकर –उमाशंकर शुक्ल, बिहारी रत्नाकर–जगन्नाथदास रत्नाकर, केशव ग्रंथावली, आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र

सहायक ग्रंथ –

1. भारतीय पाठालोचन की भूमिका : 1971 : डॉ.एस.एम. कात्रे, अनुवाद उदयनारायण तिवारी
2. पाठानुसंधान : माताप्रसाद गुप्त
3. पाठानुसंधान : सियाराम तिवारी
4. पाण्डुलिपि विज्ञान : सत्येन्द्र
5. पाठालोचन के सिद्धान्त : गोविन्दनाथ राजगुरू
6. पाठ संपादन के सिद्धान्त : कन्हैया सिंह
7. पांडुलिपि परिचय : चन्द्रदास अयोध्या
8. पाठालोचन सिद्धांत एवं प्रक्रिया : विमलेश कांति

अनुवाद : सिद्धान्त एवं प्रविधि

कोर्स कोड – HIN-DCC-T-404 (C)

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

अनुवाद : सिद्धान्त एवं प्रविधि

उद्देश्य –

छात्र अनुवाद की प्रक्रिया, महत्त्व और वैश्विक साहित्य में अनुवाद की स्थिति और गति से परिचित हो सकेगा।

परिणाम–

भाषा कौशल के माध्यम से रोजगार की दिशा में आगे बढ़ सकेगा और वैश्विक साहित्य परिदृश्य की समझ बढ़ेगी।

इकाई–1

अनुवाद : अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, परम्परा, विस्तार, अनुवाद–विज्ञान या कला शास्त्र अनुवाद की प्रासंगिकता।

इकाई–2

अनुवाद की प्रक्रियाः विश्लेषण, अंतरण, पुनर्गठन, अनुवादक की भूमिका

इकाई–3

अनुवाद के प्रकार : लिप्यंकन, लिप्यंतरण, अंतःभाषिक, अंतरभाषिक, रुपान्तरण, भावानुवाद, पद्यानुवाद, गद्यानुवाद, छायानुवाद, नाटय रुपान्तरण आदि।

मशीनी अनुवाद : संभावना और सीमाएँ।

इकाई 4

अनुवाद में आने वाली समस्याएँ, पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग, कोष, साहित्यिक अनुवाद, समाचारों का अनुवाद आदि के साथ भाषिक संरचना ओर शैली, सांस्कृतिक शब्दावली, लोकोक्तियाँ, मुहावरे, लाक्षणिक उपयोग।

इकाई–5

अनुवाद व्यवहार

. अंग्रेजी से हिन्दी/हिन्दी से अंग्रेजी
. राजस्थानी से हिन्दी/ हिन्दी से राजस्थानी (एक परिच्छेद शब्दसीमा 700 शब्द।)

सहायक ग्रंथ –

1. अनुवाद विज्ञान : भोलानाथ तिवारी
2. कार्यालय अनुवादी की समस्याएँ : भोलानाथ तिवारी
3. अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा : सुरेश कुमार
4. कार्यालयीन अनुवाद निर्देशिका : गोपीनाथ श्रीवास्तव
5. अनुवाद सिद्धान्त और प्रयोग : जी गोपीनाथन
6. अनुवाद कला : डॉ. विश्वनाथ अय्यर
7. अनुवाद कला विचार : आनंद प्रकाश शिवाजी
8. अनुवाद प्रक्रिया : सीतारानी पालीवाल
9. अनुवाद : सिद्धान्त और प्रयोग : कैलाशचन्द्र भाटिया
10. अनुवाद : सिद्धान्त और समस्याएँ : रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव

लोक साहित्य

कोर्स कोड – HIN-DCC-T404 (D)

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

लोक साहित्य

उद्देश्य–

छात्र लोक साहित्य की अवधारणा के साथ लोक और शास्त्र के सम्बन्ध के माध्यम से लोक संस्कृति के विविध पहलू और आयामों से परिचित हो सकेंगे।

परिणाम–

लोक साहित्य के विविध रूपों और राजस्थानी संस्कृति में उनकी व्याप्ति, प्रभाव और उपस्थिति का विश्लेषण कर सकेंगे।

लोक साहित्य के विविध सन्दर्भों से परिचय तो बढ़ेगा ही, साथ ही भूमण्डलीकरण के दौर में लोक की प्रासंगिकता को भी जान–समझ सकेंगे।

इकाई – 1

'लोक' की अवधारणा लोक और शास्त्र, लोक और लोकवार्ता, लोक संस्कृति, साहित्य और लोक की अवधारणा, अध्ययन की प्रक्रिया एवं संकलन की समस्याएँ।

इकाई–2

लोक साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण– लोकगीत, लोक नाट्य, लोककथा, लोकगाथा, लोकोक्ति साहित्य, कथानक रूढ़ियाँ एवं अभिप्राय, लोककथा निर्माण में अभिप्राय (motif)।

इकाई–3

राजस्थानी लोक गीत– वर्गीकरण एवं प्रतिपाद्य

राजस्थानी लोक कथाएँ

राजस्थानी लोकगाथा : वर्गीकरण एवं प्रमुख लोक गाथाएँ : पाबूजी, बगड़ावत का परिचय

इकाई–4

राजस्थानी लोक नाट्य : ख्याल, तमाशा, स्वांग, नौटंगी, तुर्रा–कलंगी आदि का परिचय।

राजस्थानी लोकोक्तियाँ, राजस्थानी संस्कृति और राजस्थानी लोक साहित्य का संकलन एवं संरक्षण के विविध संस्थान एवं गतिविधियाँ।

इकाई–5

लोक साहित्य में सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक चेतना।

भूमण्डलीकरण के दौर में लोक का पुनरोदय एवं लोक का व्यावसायिक उपयोग।

सहायक ग्रंथ–

1. लोक साहित्य विज्ञान : सत्येन्द्र
2. लोक साहित्य की भूमिका : धीरेन्द्र वर्मा
3. लोक साहित्य का अध्ययन : त्रिलोचन पाण्डे
4. लोक साहित्य की भूमिका : कृष्णदेव उपाध्याय
5. लोक साहित्य : सुरेश गौतम
6. लोक आख्यान : परम्परा और परिदृश्य : श्यामसुन्दर दुबे
7. लोक पाठ और विमर्श : सत्यप्रिय पाण्डे
8. लोक साहित्य विमर्श : श्याम परमार
9. लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा : मनोहर शर्मा
10. राजस्थानी लोक साहित्य अध्ययन के आयाम : रामप्रसाद दाधीच
11. राजस्थानी लोकगाथा : एक अध्ययन : कृष्णकुमार शर्मा
12. राजस्थानी लोक साहित्य : नानूराम संस्कर्ता
13. लोकगीत की सत्ता : सुरेश गौतम

विशिष्ट साहित्यकार

गोस्वामी तुलसीदास

कोर्स कोड – HIN-DCC-T 405(A)

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

गोस्वामी तुलसीदास

उद्देश्य –

तुलसीदास के जीवन, काव्य व्यवहार और सिद्धान्तों एवं जीवन दर्शन का बोध होगा।

परिणाम –

तुलसी साहित्य के पठन से सम्यक् मानवीय बोध एवं मानवीय मूल्यों के आदर्शरूप को प्राप्त करने की जिजीविषा बढ़ेगी।

इकाई 1

रामचरितमानस (अयोध्याकाण्ड) :–

प्रबंधात्मकता, काव्य सौन्दर्य, आदर्श रूप, रामकाव्य परम्परा, लोकमंगल, रस योजना, चित्रकूट सभा का महत्त्व, तुलसी का युगबोध, समन्वय, लोकनायकत्व, भारतीय समाज में रामचरितमानस का स्थान, भाषा–शैली, शिल्प विधान ।

इकाई–2

विनय पत्रिका :–

तुलसी साहित्य में विनय पत्रिका का स्थान, भावानुभूति, मुक्तक काव्य की दृष्टि से तुलसी का मूल्यांकन, लोकमंगल की अवधारणा, समन्वय, भाषा–शैली, शिल्प–विधान।

इकाई–3

कवितावली (उत्तरकाण्ड) :–

वस्तुविधान, काव्य रूप, रस योजना, दर्शन, यथार्थबोध, प्रासंगिकता, काव्य सौष्ठव ।

इकाई–4

गीतावली (बालकाण्ड एवं अयोध्याकाण्ड) :–

प्रामाणिकता, मुक्तक काव्य की दृष्टि से मूल्यांकन, वात्सल्य निरूपण, काव्य

इकाई 5

तुलसी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि :–

आध्यात्मिक दर्शन समाज दर्शन, काव्य दृष्टि ।

सहायक ग्रन्थ :–

1. गोस्वामी तुलसीदास : रामचन्द्र शुक्ल, ना. प्र. सभा, वाराणसी
2. तुलसीदास और उनका युग : राजपति दीक्षित, ज्ञानमण्डल, वाराणसी
3. तुलसीदास : डॉ. माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी परिषद्, इलाहाबाद
4. तुलसी दर्शन : बलदेवप्रसाद मिश्र, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

5. तुलसीदास : चन्द्रबली पाण्डेय, ना. प्र. सभा,वाराणसी।
6. रामचरितमानस का काव्यशास्त्रीय अनुशीलन : डॉ. रामकुमार पाण्डेय, अनुसंधान प्रकाशन, जयपुर
7. आधुनिक वातायन से : रमेश कुमार मेघ
8. तुलसी के भक्त्यात्मक गीत : डॉ. वचनदेव कुमार।
9. लोकवादी तुलसीदास : विश्वनाथ त्रिपाठी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
10. तुलसीदास : सं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
11. हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि : डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, विनोद प्रकाशन, आगरा।
12. तुलसी और उनका युग : जयकिशन प्रसाद,रवीन्द्र प्रकाशन,आगरा
13. गोसांई तुलसीदास : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र।
14. हिन्दी के प्राचीन कवि : डॉ. विमल।
15. तुलसी साहित्य का पुनर्मूल्यांकन : डॉ रामानंद तोषनीवाल ।

मीरां

कोर्स कोड – HIN-DCC-T 405 (B)

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

मीरां

उद्देश्य–

इस सामग्री से गुजरने के पश्चात छात्र मीरां के जीवन, दर्शन, भक्ति और उसके वैशिष्ट्य से परिचित हो सकेंगे।

परिणाम–

मीरां काव्य की कलात्मक ऊँचाई के साथ मीरां के सन्दर्भ में ऐतिहासिक, भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि का सम्यक् अवबोध प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई–1

मीरां पदावली : सं. शंभुसिंह मनोहर

इकाई–2

भक्तिकाल की पृष्ठभूमि, भक्ति का उदय एवं विकास, भक्ति आन्दोलन और मीरां

इकाई–3

मीरां की जीवन यात्रा, उनकी भक्ति का स्वरूप, वैशिष्ट्य और आराध्य सम्बन्धी विचार

इकाई–4

मीरां की प्रेमभावना, मीरां की वेदना, मीरां काव्य और लोकमानस, मीरां काव्य की दार्शनिकता एवं सामाजिक भावभूमि।

इकाई–5

मीरां की काव्यकला, भारतीय भक्त कवयित्रियों में मीरां की उपस्थिति, मीरां ऐतिहासिक एवं आलोचनात्मक संदर्भ, मीरा के पश्चिमी पाठ का मूल्यांकन।

सहायक ग्रंथ–

1. मीरां मंदाकिनी : नरोतमदास स्वामी
2. मीरां माधुरी : बजरत्नदास
3. मीरां, सहजो और दयाबाई : वियोगी हरि
4. मीरां पदावली : परशुराम चतुर्वेदी
5. उत्तर भारत की संत परम्परा : परशुराम चतुर्वेदी
6. मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ : सावित्री सिन्हा
7. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास : सुमन राजे
8. मीरां का काव्य : विश्वनाथ त्रिपाठी
9. मीरांबाई का ऐतिहासिक एवं सामाजिक विवेचन : हुकुमसिंह भाटी
10. मीरां का जीवनवृत्त एवं काव्य : कल्याण सिंह शेखावत
11. पचरंग चोला पहर सखि री (मीरां जीवन और समाज) : माधव हाड़ा

प्रेमचन्द

कोर्स कोड – HIN-DCC-T 405(C)

समय : 3 घण्टे

अंक योजना
लिखित परीक्षा – 120
आन्तरिक मूल्यांकन – 30
पूर्णांक – 150

प्रेमचन्द

उद्देश्य –

छात्र उत्तर भारत के ही नहीं वरन् भारतीय ग्राम्य जीवन के यथार्थ और विडम्बनाओं से परिचित हो सकेंगे एवं किसान जीवन की विसंगतियों एवं विद्रूपताओं के साथ–साथ उनके जीवन सत्व को देख–समझ सकेंगे।

परिणाम –

प्रेमचन्द के आदर्शात्मक यथार्थ के प्रति रूझान बढ़ेगा। मानवीय मूल्यों की समझ गहरी होगी और सात्विक जीवन के प्रति आकर्षण बढ़ेगा।

इकाई–1

कुछ विचार (निबन्ध)–

प्रेमचन्द के निबन्ध और गद्य–शैली, प्रेमचन्द के अनुसार साहित्य का उद्देश्य साहित्य के तत्त्व, उपन्यास और कहानी पर विचार, कला संबंधी विचार, राष्ट्रभाषा और साहित्य का संबंध, साहित्य संबंधी विचार, राष्ट्रभाषा, लिपि–विचार, प्रेमचन्द का आदर्श और यथार्थ।

इकाई–2

गबन (उपन्यास) –

प्रतिपाद्य प्रमुख चरित्र, चरित्र चित्रण की विशेषताएँ, नायकत्व, समसामयिक जीवन की समस्याएँ भाषा–शैली, औपन्यासिक शिल्प।

इकाई–3

रंगभूमि (उपन्यास)–

कथानक की कलात्मकता, प्रमुख चरित्र, चरित्र चित्रण की विशेषताएँ, रंगभूमि में औद्योगिक विकास की हानियाँ, गांधीवादी विचारधारा, उद्देश्य, भाषा–शैली, औपन्यासिक शिल्प।

इकाई–4

मानसरोवर भाग 1 (कहानी संग्रह) –

संकलित कहानियां 1. अलग्योझा, 2. ईदगाह, 3. माँ, 4. बेटों वाली विधवा, 5. बड़े भाईसाहब, 6. शांति, 7. नशा, 8. स्वामिनी, 9. ठाकुर का कुआँ, 10. घर जमाई, 11. पूस की रात, 12. झाँकी, 13. गुल्ली डण्डा, 14 ज्योति, 15 दिल की रानी 16. धिक्कार, 17. कायर, 18 शिकार, 19 सुभागी, 20. अनुभव, 21. लाँछन, 22. आखिरी टीला, 23 तावान, 24 घासवाली, 25. गिला. 26. रसिक सम्पादक, 27. मनोवृत्ति । प्रेमचन्द की कहानी कला, कहानियों का वैशिष्ट्य, कहानियों का तात्त्विक विश्लेषण, कहानियों के उद्देश्य, भाषा–शैली, शिल्प।

इकाई–5

कर्बला (नाटक)

नाटककार के रूप में प्रेमचन्द नाटक का कथ्य, पात्र योजना, विशेषताएँ, रंगमंचीयता शिल्प ।

सहायक ग्रंथ–

1. प्रेमचन्द की उपन्यास यात्रा : नवमूल्यांकन, : डॉ. शैलजा जैदी
2. प्रेमचन्द : डॉ. रामविलास शर्मा।
3. प्रेमचन्द कथा कोश : डॉ. कमल किशोर गोयनका।
4. प्रेमचन्द और कहानी कला : डॉ. सत्येन्द्र।
5. कलम का सिपाही : अमृतराय
6. प्रेमचन्द : सं. डॉ. विश्वनाथ तिवारी ।
7. समस्यामूलक उपन्यासकार : डॉ. महेन्द्र भटनागर
8. हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा : डॉ. रामदरश मिश्र।
9. प्रेमचन्द के उपन्यास कथा संरचना : मीनाक्षी श्रीवास्तव

10. हिन्दी उपन्यास पहचान और परख : डॉ. इन्द्रनाथ मदान।
11. प्रेमचन्द की प्रतिभा : डॉ. इन्द्रनाथ मदान।
12. प्रेमचन्द और उनका युग : डॉ. रामविलास शर्मा।
13. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद : डॉ. त्रिभुवन सिंह।
14. हिन्दी उपन्यास सामाजिक चेतना : डॉ. कुँवरपाल सिंह।
15. हिन्दी कहानी की रचना प्रक्रिया : डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव।
16. प्रेमचंद के साहित्य में दलित एवं नारी विमर्श : अनिल सूर्यवंशी।

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

कोर्स कोड – HIN-DCC-T-405 (D)

समय : 3 घण्टे

अंक योजना

लिखित परीक्षा – 120

आन्तरिक मूल्यांकन – 30

पूर्णांक – 150

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

उद्देश्य–

छात्र महाप्राण निराला के जीवन परिचय, परिस्थितियों एवं तत्कालीन साहित्य के असर के साथ उनके जीवन की साहित्यिक यात्रा का अवलोकन कर सकेंगे एवं उनके रचनात्मक संघर्षों से परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

परिणाम–

छात्र छायावादी काव्य आन्दोलन के साथ प्रगतिशील हिन्दी कविता से होते हुए आधुनिक हिन्दी कविता के रूप, संरचना और शैली पर पड़े निराला के प्रभाव को आत्मसात कर सकेंगे और निराला के गद्यशिल्प का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई–1

निराला का जीवन परिचय, साहित्यिक पृष्ठभूमि, बांग्ला साहित्य व बैसवाड़ी जीवन का प्रभाव, निराला की साहित्यिक यात्रा।

इकाई–2

– छायावादी काव्यान्दोलन और निराला का काव्य

– प्रगतिवादी काव्य आन्दोलन और निराला काव्य

– गद्यकार निराला

इकाई–3

कविता –

– जागो फिर एक बार

– वर दे वीणा वादिनी

– तोड़ती पत्थर

– भिक्षुक

इकाई–4

दीर्घ कविता – सरोज स्मृति

इकाई–5

उपन्यास – बिल्लेसुर बकरिहा

सहायक ग्रंथ–

1. राग–विराग : सं. रामविलास शर्मा
2. निराला की साहित्य साधना : रामविलास शर्मा
3. निराला : रामविलास शर्मा
4. कवि निराला : नन्ददुलारे वाजपेयी
5. निराला मूल्यांकन : इन्द्रनाथ मदान
6. निराला : एक आत्महंता आस्था : दूधनाथ सिंह

परीक्षा एवं मूल्यांकन योजना–

- परीक्षा प्रश्न पत्र 03 घण्टे की अवधि का होगा।
- कुल मूल्यांकन 150 अंकभार का रहेगा, जिसमें 120 अंक की लिखित परीक्षा होगी तथा 30 अंक का आन्तरिक मूल्यांकन होगा।
- 120 अंकों के उपर्युक्त परीक्षा सेमेस्टर के अंत में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस सेमेस्टर परीक्षा का प्रत्येक प्रश्न पत्र 3 खण्डों (अ–ब–स) में निम्नानुसार विभक्त होगा।
- खण्ड 'अ' (20 अंक) में कुल 10 प्रश्न होगें, प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त–स्थान–पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
- खण्ड 'ब' (40 अंक) मे 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से 1 प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अंकों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
- खण्ड 'स' (60 अंक) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अंको का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।